प्रोस्कोप परियोजना: 2022-26

परियोजना के इस चरण में जैविक उपभोग और उत्पादन से सम्बन्धित दोनों कार्यों को समाहित किया जा रहा है, साथ ही दो नये जिलों को भी जोड़ा जा रहा है। सभी परियोजना से सम्बन्धित लक्षित जिलों में नई सतत् प्रणालियों की पहचान करने के लिए दो आयामी दृष्टिकोण अपनाया जाएगा। जो कि सतत् प्रणाली को प्रोत्साहन करने में मदद कर सकता है। साथ ही, सतत् जीवन शैली को बढ़ाने में सहायक हो सकता है। इस पूरी प्रक्रिया में न केवल नए तरीकों की पहचान एवं अध्ययन करना ही सीमित है, बल्कि उन तरीकों की पहचान करना भी है जिन पर पूर्व में कार्य किया जा चुका है।

राजस्थान राज्य में परियोजना (प्रोस्कोप) के तहत सभी भागीदारों तक पहुंच बढ़ाकर परियोजना के उद्देश्यों को पूरा किया जाएगा। परियोजना की गतिविधियों के क्रियान्वयन के लिए निम्नलिखित रणनीतिक तरीकों को अपनाया जाएगा।

परियोजना की गतिविधियां

- **परियोजना के नए जिलों का भ्रमण:** इसके तहत परियोजना से सम्बन्धित गतिविधियों के क्रियान्वयन के लिए जिलों के ब्लॉकों एवं ग्राम पंचायतों का भ्रमण किया जाएगा। साथ ही, परियोजना में कार्य करने वाले सहयोगियों की पहचान की जाएगी।
- **सामुदायिक भागीदारी रचनात्मक रूप से:** परियोजना के तहत सभी भागीदारों को विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ा जाएगा ताकि परियोजना के बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकें।
- **महिला एवं पुरूष की समान भागीदारी:** ग्रामीण क्षेत्रों की ऐसी महिलाएं जो संगठित एवं जागरूक नहीं हैं, उन महिलाओं की परियोजना में समान रूप से सभी गतिविधियों में भागीदारी रखी जाएगी।
- **मानवाधिकार आधारित दृष्टिकोण की अवधारणा को अपनाना:** परियोजना के तहत सभी गतिविधियों में समाज के सभी वर्गों की समान रूप से भागीदारी रखी जाएगी। इसमें अनुसूचित जाति एवं जनजाति एवं अन्य वंचित वर्गों का समान रूप से हर गतिविधि में ध्यान रखा जाएगा।
- **परियोजना से सम्बन्धित सभी भागीदारों के साथ समन्वय स्थापित करना:** लाभार्थियों को शक्ति प्रदान करने एवं उनको अधिकार दिलवाने के साथ ही उनकी आवश्यकता के लिए आवाज उठाने हेतु एक मजबूत नेटवर्क की स्थापना करना।
- **सतत् प्रक्रिया की अवधारणा:** आदर्श जैविक ग्राम की अवधारणा सतत् प्रक्रिया की ओर अग्रसर होगी तथा आने वाले समय में बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे।
- **आदर्श दृष्टिकोण पर ध्यान केन्द्रित करना:** क्षेत्र की चयनित ग्राम पंचायतों में कार्य करने से किसी एक पंचायत को आदर्श ग्राम पंचायत बनाने में मदद मिलेगी और इससे बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे।
- **क्षमतावर्धन:** जैविक किसानों के लिए उच्चकोटी का प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और जैविक खेती के प्रमाणीकरण की प्रक्रिया सतत् रूप से निरंतर जारी रहेगी।
- **समाचार एवं सामाजिक संचार माध्यम:** परियोजना के तहत की जाने वाली गतिविधियों की जानकारी समाचार पत्रों एवं सामाजिक संचार माध्यमों के जरिये समाज के सभी वर्गों तक पहुंचाई जाएगी।
- **पारम्परिक सांस्कृतिक गतिविधियां:** परियोजना के तहत सभी तरह की जागरूकता गतिविधियों में समाज के अशिक्षित एवं अनपढ़ लोगों को जागरूक करने के लिए पारम्परिक लोक कलाकारों का सहयोग लिया जाएगा।
- **पैरवी:** परियोजना के तहत भागीदारों से जुड़े मुद्दों को सरकार के नीति निर्माताओं और कर्त्तव्यधारकों तक पैरवी के लिए पहुंचाना।

प्रोओर्गेनिक: एक अवलोकन

परियोजना के वर्ष 2022-26 के आगामी चरण में पिछले अनुभव एवं बनाए गए मजबूत नेटवर्क को देखते हुए हम दो और जिलों को जोड़कर जैविक उपभोग और उत्पादन पर काम को आगे बढ़ा रहे हैं। इस प्रकार आने वाले समय में राजस्थान के 12 जिलों में कार्य किया जाएगा। परियोजना के तहत पूर्व में 8 वर्षों तक राज्य के 10 जिलों में सक्रिय रूप से कार्य किया गया, उसके परिणाम अब क्षेत्र में दिखाई देने लगे हैं। आने वाला समय एक अभिनव दृष्टिकोण के साथ काम करने का अच्छा अवसर प्रदान कर रहा है। साथ ही, देश एवं राज्य में भी परियोजना के लिए अनुकूल माहौल बन रहा है। सम्पूर्ण देश में अब लोगों का जैविक खेती की ओर रूझान बढ़ रहा है।

प्रोओर्गेनिक: दीर्घकालीन एवं व्यापक उद्देश्य

- परियोजना के प्रभाव को बनाए रखने के लिए प्रत्येक लक्षित जिले में एक अच्छे वातावरण में आदर्श जैविक ग्राम का विकास करना।
- जैविक उपभोग एवं उत्पादन के बारे में सामाजिक जागरूकता पैदा करना।
- क्षमतावर्धन व प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।
- विषय के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाना, साथ ही पैरवी करना।

प्रोओर्गेनिक गतिविधियां

- क्षेत्रीय भ्रमण एवं परियोजना सहयोगियों का चयन।
- परियोजना का शुभारम्भ और परियोजना सहयोगियों के लिए आमुखीकरण बैठक का आयोजन।
- जैविक उपभोग और उत्पादन पर जागरूकता अभियान।
- आदर्श जैविक गांवों का निर्माण करना।
- किसानों के लिए उच्चकोटी प्रशिक्षण और शैक्षणिक भ्रमण।
- चयनित विद्यालयों में जैविक क्लब और उद्यान विकसित करना।
- सामुदायिक बीज प्रबन्धन को मजबूती प्रदान करना।
- ब्लॉक स्तरीय जैविक मेलों का आयोजन करना।
- ग्रीन एक्शन वीक अभियान को संचालित करना।
- राज्य स्तर पर भागीदारों के साथ परामर्श बैठक आयोजित करना।
- परियोजना के तहत कार्य कर रहे सहयोगियों द्वारा परियोजना क्षेत्रों में की जा रही गतिविधियों की गहन निगरानी हेतु भ्रमण करना।

परियोजना के तहत राजस्थान के चयनित 12 जिले

बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, दौसा, डूंगरपुर, जयपुर, झालावाड़, जोधपुर, कोटा, प्रतापगढ़, सवाई माधोपुर और उदयपुर।

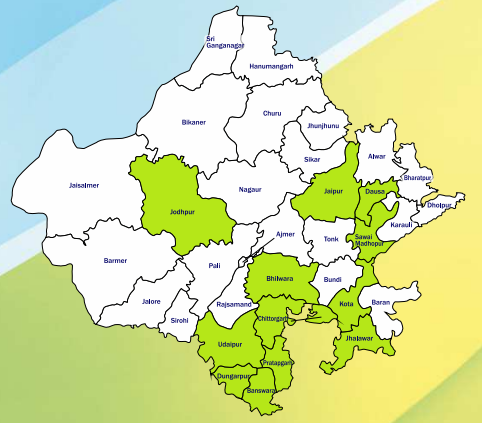

प्रोओर्गेनिक परियोजना से अपेक्षित परिणाम

- चयनित ग्राम पंचायतों में कार्य करने से कम से कम एक ग्राम को आदर्श जैविक गांव बनाया जा सकेगा।
- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूली बच्चों में सतत् उपभोग के प्रति संवेदनशीलता बढ़ेगी।
- मौजूदा सामुदायिक बीज केन्द्रों को मजबूती मिलेगी तथा जैविक किसानों को इसका भरपूर लाभ मिलेगा।
- जैविक किसानों को परियोजना के तहत दिया जाने वाला उच्चकोटी प्रशिक्षण उन्हें आज की तुलना में कुशल जैविक किसान बना देगा।
- परियोजना के तहत राज्य के विभिन्न जिलों में जैविक मेलों का आयोजन किया जाएगा। इससे किसानों को घरेलू बाजार मिलने में सुविधा रहेगी तथा इससे मांग और आपूर्ति की खाई पाटने में भी मदद मिलेगी।

सतत् उपभोग और उत्पादन (एस.सी.पी.): एक परिदृश्य

वर्तमान समय में हम पहले से कही अधिक प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग कर रहे हैं जो कि यह प्रकृति की उत्पादन क्षमता से कही अधिक है। सतत् उपभोग और उत्पादन की सोच से हम सतत् जीवन शैली की ओर बढ़ सकते हैं। पर्यावरणीय गिरावट से आर्थिक विकास को गति नहीं मिल पा रही है। इससे स्वास्थ्य, शिक्षा, समानता और सशक्तिकरण सभी पर प्रतिकूल रूप से प्रभाव पड़ रहा है। कट्स ने पूर्व में सतत् उपभोग प्रणालियों पर एक दस्तावेजीकरण तैयार किया है, इसके साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर उपभोक्ता के दृष्टिकोण से सतत् उपभोग का भी अध्ययन किया है। इस परियोजना के तहत कट्स सतत् उपभोग की धारणाओं, प्रथाओं एवं पद्धतियों को समझने के लिए एक सर्वेक्षण आयोजित करके राजस्थान के चयनित शहरों में सतत् उपभोग एवं उत्पादन पर कार्य करने जा रहा है। साथ ही इन सभी शहरों के लिए सतत् उपभोग सूचकांक तैयार किया जाएगा। इस प्रक्रिया के माध्यम से स्थानीय उपभोक्ताओं एवं भागीदारों को सतत् जीवन शैली के प्रति संवेदनशील बनाया जाएगा। साथ ही सरकार की मौजूदा नीतियों को सुव्यवस्थित करने और उपभोक्ताओं के दृष्टिकोण से सतत् उपभोग और उत्पादन के लिए सशक्त रूप से समर्पित प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए पैरवी की जाएगी।

परियोजना के उद्देश्य

- प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग, कचरे का उत्सर्जन और प्रदूषण को कम करने हेतू जागरूकता बढ़ाना।
- प्राकृतिक संसाधनों की दक्षता को बढ़ाना और स्थायी (सतत्) जीवन शैली को बढ़ावा देना।

परियोजना हेतू चयनित जिले

भरतपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, चूरू, जयपुर, जोधपुर और कोटा।

परियोजना की गतिविधियां

- उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम।
- भागीदारों को विषय के प्रति संवेदनशील बनाना।
- सतत् उपभोग और उत्पादन की प्रथाओं का दस्तावेजीकरण करना।
- सतत् उपभोग सूचकांक तैयार करना।
- उपभोक्ता सर्वेक्षण।
- राज्य स्तरीय बैठक का आयोजन और सूचकांक का प्रस्तुतिकरण।

परियोजना के अपेक्षित परिणाम

- उपभोक्ता जागरूकता बढ़ाकर सतत् जीवन शैली को बढ़ावा देंगे और इससे सतत् उपभोग की संस्कृति का विकास होगा।
- सतत् उपभोग नीति के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए नीति निर्माताओं के साथ पैरवी करने में सहायक होगा।
- सतत् विकास लक्ष्य12 स्थानीय स्तर पर पहुंचेगा और भागीदारों को सतत् उपभोग एवं उत्पादन पर उनकी भूमिका के बारे में जागरूक किया जाएगा।
- सतत् उपभोग सूचकांक और उपभोक्ताओं के सर्वेक्षण के निष्कर्ष दीर्घकालीन जागरूकता कार्यक्रम और पैरवी रणनीति तैयार करने में सहायक सिद्ध होंगे। इसके साथ ही अध्ययन के निष्कर्ष स्थानीय प्रशासन और सरकार के लिए भी सतत् उपभोग एवं उत्पादन की नीतियों पर कार्य करने में सहयोग करेंगे।

This document has been produced with the financial contribution by Swedish public development co-operation aid through the Swedish Society for Nature Conservation, SSNC. The views herein shall not necessarily be taken to reflect the official opinion of SSNC or its donors.

CUTS International

कट्स सेन्टर फॉर कन्ज्यूमर एक्शन, रिचर्स एण्ड ट्रेनिंग
डी-218 A, भास्कर मार्ग, बनीपार्क, जयपुर-302016, भारत
फोन: 91.141. 2282821, फैक्स: 91.141.2282485, 4015395
ईमेल: cart@cuts.org; वेब: http://cuts-cart.org/proscop/
यहां भी दिल्ली, कोलकता और चित्तौड़गढ़ (भारत); लुसाका (जाम्बिया); नैरोबी (केन्या); आक्करा (घाना); हनोई (वियतनाम); जिनेवा (स्विटजरलैंड) और वॉशिंगटन डी.सी. (यूएसए)

मई 2022

Swedish Society for Nature Conservation

CUTS International

राजस्थान में उपभोक्ताओं की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए सतत् उपभोग की गतिविधियों एवं जैविक उपभोग व उत्पादन को बढ़ाते हुए जीवन शैली संस्कृति का विकास करना (प्रोस्कोप)

जनवरी 01, 2022–जनवरी 31, 2026